

देवा रे गणपति देवा रे | Subeg Singh

गौरी माँ के लाल पधारे
देवो के इक देव हमारे
रिद्धि सिद्धि सुख के दाता
आज चलें खुद संग हमारे
देवा रे गणपति देवा रे
मैंने आस लगाई मैंने कृपा पाई
तेरी एक दया से मैंने तो मंज़िल पाई

वेदों ग्रंथों में तेरा आदर
कृपा दया के तुम हो सागर
पाप बढ़ा जब जब धरती पर
सत्य किया तुमने ही उजागर
देवा रे गणपति देवा रे
मेरे देव गजानन मेरे विघ्न विनाशन
मेरे मंगल मूर्ति मेरे शुभ गन कानन

लाल बाग़ के तुम हो राजा
मस्तक पे अब तेज विराजा
दुखियाँ निर्बल के रखवाले
तोड़ दिए अज्ञान के ताले
देवा रे गणपति देवा रे
गौरी माँ के लाल पधारे
देवो के एक देव हमारे
रिद्धि सिद्धि सुख के दाता
आज चलें खुद संग हमारे

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a6%e0%a5%87%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%97%e0%a4%a3%e0%a4%aa%e0%a4%a4%e0%a4%bf-%e0%a4%a6%e0%a5%87%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%b0%e0%a5%87-subeg-singh/>